Tender Heart High School, Sector-33 B, Chandigarh.

कक्षा- नौवीं
विषय- हिन्दी साहित्य

शिक्षिका- श्रीमती कल्पना शर्मा

पुस्तक : एकांकी संचय

पाठ-५ 'सूखी डाली' (एकांकी) लेखक- उपेन्द्रनाथ 'अश्क'

सुप्रभात प्यारे बच्चो!

आज हम कक्षा नौवीं की हिन्दी साहित्य की पाठ्य-पुस्तक 'एकांकी संचय' की पृष्ठ संख्या-३१ पर दिए पाठ-५ 'सूखी डाली' पर चर्चा करेंगे।

बच्चो! 'सूखी डाली' एकांकी आपको कक्षा नौवीं में करवा दी गई है परन्तु आज हम इस एकांकी को संक्षेप में पढ़ेंगे व समझेंगे। एकांकी को समझकर आपको गृहकार्य में इस एकांकी से संबंधित कुछ प्रश्नोत्तर स्वयं करने के लिए दिए जाएँगे।

'सूखी डाली' शीर्षक एकांकी एक ऐसे संयुक्त परिवार की कथा है जिसमें मुखिया की सूझ-बूझ व परिवार के सदस्यों के बीच आपसी सामन्जस्य से परिवार के द्वारा परिवार को जोड़े रखना- का वर्णन किया गया है।

परिवार के मुखिया दादा जी (मूलराज) ७२ वर्ष की आयु में पोते-पोती से भरे-पूरे परिवार पर अपना पूरा अधिकार रखते हैं। १९१४ के युद्ध में बड़े बेटे के शहीद होने पर सरकार से उन्हें एक मुरब्बा (२५ एकड़) ज़मीन मिलती है। अपनी मेहनत, साहस व दूरदर्शिता से दादा दस मुरब्बा में बदल देते हैं। समाज में उनका काफी रुतबा है।

एकांकी का आरंभ गुस्से से आती इंदु से होती है। बड़ी बहू के पूछने पर इंदु बताती है कि छोटी बहू

(वेला ने) रजवा को नौकरी से निकाल दिया है। उनका मानना है कि न तो रजवा को काम करने का सलीका है और न ही घर वालों को काम करवाने का। छोटी बहू अपने आगे सबको मूर्ख और गँवार समझती है। उन्हें अपने मायके का बहुत घमण्ड है। रजवा भी छोटी बहू का काम करने से इंकार कर देती है। तभी मंझली बहू बताती है कि छोटी बहू हमें ही नहीं अपने पति को भी कुछ नहीं समझती। परेश के लाख समझाने पर भी उसने अपने कमरे के सारे फर्नीचर को सड़ा-गला और पुराना बताकर कमरे से बाहर निकाल दिया। परेश की एक न चली। तब इन्दु कहती है कि उनकी सिर्फ जबान चलती है, हाथ नहीं। दादा जी ने कुछ कपड़े धोने को दिए वे बिना धुले गुसलखाने में मल रहे हैं। छोटी भाभी अर्थात् इंदु की माँ इन्दु से वे कपड़े धोने के लिए कहती है। इस तरह घर की महिलाएँ छोटी बहू की हँसी उड़ाती हैं।

मँझले बेटे कर्मचन्द से पैर दबवाते समय दादा जी बच्चों के द्वारा बरगद की टूटी डाली को आँगन में रोपता देख कहते हैं कि एक बार डाली टूट जाने पर चाहे जितना पानी दो, वह कभी नहीं पनपती। तब कर्मचन्द दादा जी को बताते हैं कि छोटी बहू यहाँ खुश नहीं है, वह परेश के साथ अलग रहना चाहती है। तब दादा जी कहते हैं कि बड़प्पन बाहरी वस्तु का नहीं, वरन् मन का होना चाहिए। यदि उसे घृणा के बदले स्नेह मिलेगा तो वह अलग होने की बात न सोचेगी।

दादा जी परेश से कहते हैं कि तुम्हारे ताऊ को नए फैशन की जानकारी नहीं है इसलिए तुम छोटी बहू को बाज़ार से पसंद की चीज़ें दिला लाओ। वह अपने पिता की इकलौती संतान है। अतः इस

भीड़- भाड़ में वह घबराती होगी। हम सब मिलकर उसका मन लगाने का प्रयास करेंगे लेकिन जब परेश उन्हें बताता है कि घर की सभी महिलाएँ उसकी (बेला की) शिकायत करती हैं। दादा जी समस्या का हल शीघ्र ही निकालने का परेश को आश्वासन देते हैं।

समस्या को हल करने के लिए दादा जी छोटी बहू के अलावा घर के सभी सदस्यों को समझाते हैं। दादा जी के अनुसार उनकी इच्छा है कि यहाँ भी उसे उचित आदर-सत्कार मिले। सब उसका कहना मानें और उसका काम भी आपस में बाँट लें। वे इस विषय में इन्दु व मँझली बहू को विशेष रूप से सावधानी बरतने का निर्देश देते हैं।

बेला बरामदे में पुस्तक हाथ में लेकर घरवालों के बदले व्यवहार से परेशान होकर बड़बड़ा रही है तभी उसकी सास आकर बेला के पुराने फर्नीचर को बाहर निकाल फेंकने की प्रशंसा करते हुए रजवा को माफ़ करने की सिफारिश करती है। उनके जाने पर बड़ी बहू व मँझली भाभी रजवा की जगह उसकी बहू को रखने का प्रस्ताव बेला के सामने रखती हैं। लेकिन बेला रुआँसी होकर चली जाती है। इसी प्रकार घर की अन्य महिलाएँ मँझली बहू की बात सुनकर हँसी-मज़ाक कर रही थीं लेकिन बेला को आता देख सब शांत हो और अपने स्थान से खड़े हो जाते हैं। उनके द्वारा अत्यधिक आदर-सत्कार दिए जाने से बेला परेशान होकर अपने कमरे में चली जाती है तथा परेश को भी घरवालों के बदले व्यवहार के विषय में बताती है। परेश उससे कहता है कि तुम भी तो यही चाहती थी। बेला इस असमंजस की स्थिति में सिसकने लगती है। इन्दु बेला को रेता देख उसे शांत कराती है तथा बताती है कि दादा जी ने सभी परिवारवालों को आपका आदर करने की बात समझायी है क्योंकि वे सब सह

सकते हैं, परिवार का विभाजन नहीं। बेला कहती है कि वह सबका आदर नहीं वरन् उनका साथ चाहती है तथा इंदु के साथ कपड़े धुलवाने में मदद करने की ज़िद करती है। बेला से काम करवाते देख दादा जी इन्दु को टोकते हैं तब बेला कहती है कि आप इस परिवार रूपी पेड़ से किसी सदस्यरूपी शाखा को अलग होता नहीं देख सकते लेकिन किसी डाली का पेड़ में लगे हुए सूख जाना आप कैसे सह सकते है। बेला के इसी कथन से पर्दा गिरता है।

गृहकार्य

निम्नलिखित अवतरण पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :-

" छोटी बहू के अतिरिक्त सबको मेरे कमरे में भेज दो। कहो कि सब काम छोड़कर मेरे पास आएँ। (रजवा जाने लगती है) और सुनो, कोई न रहे सबसे कहना - कुछ क्षण के लिए अवश्य यहाँ आ जाएँ।
जी मैं अभी जाकर सबसे कह देती हूँ।"

प्रश्न (क) कौन व्यक्ति अपने सारे परिवार को अपने कमरे में बुलाता है ? उसका परिचय दीजिए।

प्रश्न (ख) छोटी बहू कौन है ? वह उसे क्यों नहीं बुलाता ? कारण सहित उत्तर दीजिए।

प्रश्न (ग) छोटी बहू के व्यवहार से घर के सदस्यों को कैसा महसूस होता है ? उदाहरण देकर समझाइए।

प्रश्न (घ) दादा जी अपने परिवार के सामने अपनी 'छोटी बहू' का पक्ष किस प्रकार रखते हैं ?

धन्यवाद।

[अंतिम पृष्ठ]